# आतंकवाद से मुकाबले में साथ-साथ

**वाशिंगटन, डी.सी. में विदेश संबंध परिषद में फ़ेडरल ब्यूरो ऑफ़ इनवेस्टिगेशन के निदेशक रॉबर्ट एस.म्यूलर, III, का भाषण।**

लगभग तीन महीने पहले, जब सूर्य अस्त हो रहा था, कई लोग एक रबड़ की डोंगी में सवार होकर चहल-पहल भरी वित्तीय राजधानी के तट पर पहुंचे। स्वचालित हथियारों, हथगोलों और सैटेलाइट फोनों से से लदेफ़दे वे अलग-अलग दिशाओं में फैल गए।

कुछ ही घंटों बाद निर्दोष नागरिकों के शव सड़कों पर पड़े थे, इमारतें जल रही थीं, बंधक अपनी ज़िंदगी को लेकर भयभीत थे, और एक शहर की घेरेबंदी हो चुकी थी।

परंपरागत मीडिया खबरों से लेकर वीडियो फुटेज, ब्लॉग, एसएमएस तक के सहारे हमले की खबर तेज़ी से दुनियाभर में फैल गई। इसी प्रौद्यौगिकी का उपयोग हमलावरों ने न केवल पुलिस और बचाव दलों की गतिविधियों पर निगाह रखने और पकड़े जाने से बचने के लिए किया बल्कि कुछ दूर बैठे अपने आकाओं से संपर्क रखने के लिए भी किया।

यह आक्रमण बहुत अच्छी तरह समन्वित और कार्यान्वयन में बेहद सरल दिखने वाला था। जी हां, मैं मुंबई (कांड) की बात कर रहा हूं, जिसमें आतंकवादियों ने 170 से अधिक लोगों को मार डाला और 300 से अधिक लोग घायल हो गए।

इस तरह का हमला हमें याद दिलाता है कि बड़े एजेंडा और थोड़े से पैसे के सहारे आतंकवादी बहुत मामूली हथियारों का उपयोग अधिकतम

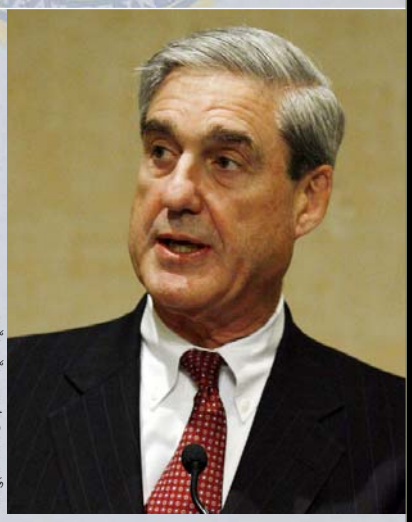

जोस लुइस मगना © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

अंतर्राष्ट्रीय स्थान मुंबई, भारत © ए.पी.-इमेज़ इमेज़ी

**दक्षता और इरादे मिलकर किसी बेहद सामान्य हथियार को भी बहुत घातक बना दने की क्षमता रखते हैं।**

प्रभाव डालने के लिए कर सकते हैं।

और यह फिर से सवाल उठाता है कि क्या इसी तरह का हमला सिएटल या सैन डिएगो, मायामी या मैनहट्टन में भी हो सकता है?

## वैश्वीकरण और आतंकवाद का बढ़ता खतरा

आज हम जिस संसार में जी रहे हैं, वैश्विक बाजारों के एकीकरण और अंतरराष्ट्रीय यात्रा की आसानी से लेकर इंटरनेट के बढ़ते उपयोग और पहुंच तक वह पिछले कुछ वर्षों में काफी बदला है। इसके साथ ही संसार और उसमें हमारी जगह का हमारा बोध भी बदला है।

पिछले ही बरस वैज्ञानिकों ने उन पिंडों के पहले चित्र लिए हैं जिन्हें वे हमारे सौरमंडल के बाहर स्थित तारों के चक्कर लगाते ग्रह मानते हैं। बीते 13 बरसों में खगोलविदों ने 300 से अधिक तथाकथित ''अति सौर'' ग्रहों की पहचान की है।

ये आधुनिक अन्वेषी उसकी पुष्टि करने की धुन में लगे हैं जिसके अस्तित्व का उन्हें विश्वास है- उसे देखने की धुन में जो अब तक नहीं देखा गया है।

यह अन्वेषण हमारे संसार को कुछ छोटा लेकिन अनन्त रूप से व्यापक भी, एकसाथ ही बना रहे हैं। और इनसे हमारे मन में यह भाव भी बनता है कि अभी बहुत कुछ ढूंढा जाना बाकी है।

कानून प्रवर्तन और सूचना संग्रह परिप्रेक्ष्य में तो 'और भी खोजा जाना' सदा ही बनी रहने वाली स्थिति है। लेकिन हम जो उद्घाटित करेंगे- नई धमकियां, नई प्रौद्योगिकियां और नए लक्ष्य- उन्हें लेकर हम खगोलविदों की तरह बहुत आशान्वित नहीं हैं।

अपराध और आतंकवाद का संसार अनन्त रूप से हमारे सामने फैला है और हम भी उसे ढूंढ रहे हैं जो हम मानते हैं कि वही कहीं मौजूद है लेकिन जिसे हम (हमेशा ही) देख नहीं पाते।

11 सितंबर के बाद के परिदृश्य में संसार को देखने की हमारी दृष्टि कुछ सीमित थी। हमारा सरोकार प्राथमिक रूप से अल-कायदा के नेतृत्व और उसके ढांचे से था।

अल-कायदा का खतरा आज भी बना हुआ है लेकिन हमें अल्पज्ञात आतंकवादी समूहों के साथ ही देसी आतंवादियों पर भी ध्यान केंद्रित करना होगा। और हमें वीजा में छूट वाले देशों के अतिवादियों के बारे में भी सोचना होगा जो अमेरिका से बस एक ई-टिकट की दूरी पर स्थित हैं।

आज भी हमें प्राथमिक रूप से खतरा पाकिस्तान और अफगानिस्तान के जनजातीय क्षेत्रों से है। लेकिन हम मगरिब और साहोल (अफ्रीका में) से लेकर यमन तक अतिवादी गतिविधि देख रहे हैं।

अल कायदा और उसके सिद्धांत से सहमति रखने वाले, संसारभर में बिखरे समूहों को लेकर हमारी चिंता बढ़ती जा रही है। इनमें से कुछ का अल कायदा से बहुत कम या बिल्कुल ही सम्पर्क नहीं होगा।

लेकिन हाशिए पर मौजूद संगठन बहुत तेज़ी से व्यापक आकांक्षाएं और आकर्षण हासिल कर सकते हैं। और अगर वे अल कायदा के केन्द्र- प्रशिक्षण से लेकर आक्रमणों की योजना और क्रियान्वयन तक- से जुड़ पाएं तो खेल पूरी तरह कुछ और ही हो जाता है।

11 सितंबर के बाद से हमने जिन भी साजिशों को बाधित किया है, उनके संदर्भ में कुछ लोग पूछते हैं कि क्या उनसे जुड़े लोगों में योजना क्रियान्वित करने के लिए पर्याप्त मंतव्य और क्षमता थी?

किसी षड्यंत्र को योजना निर्माण के चरण में ही बाधित करने के लिए शुरुआत में ही कार्रवाई करने और संदिग्ध व्यक्तियों के आक्रमण के लिए तैयार होना सुनिश्चित करने के लिए जांच करते चले जाने के बीच अनिर्णय हमेशा ही रहेगा। और दोनों मामलों में पैमाना अलग-अलग होगा।

उदाहरण के लिए फोर्ट डिक्स (न्यू जर्सी) पर हुए नियोजित हमले को ही लें। अपराध में लिप्त पाए गए लोगों ने पैन्सिल्वैनिया के जंगलों में निशाना लगाने का अभ्यास किया था। उन्होंने अल कायदा के प्रशिक्षण वीडियो देखे थे। उनके पास अड्डे का नक्शा और उसमें घुसने की योजना थी। और उन्होंने एफबीआई के एक स्टिंग ऑपरेशन से अर्धस्वचालित हथियार खरीदे थे।

मुंबई के हमलावरों की ही तरह ये लोग जितनी हो सके उतनी क्षति पहुंचाना चाहते थे। और जैसा कि मुंबई हमलों ने दिखाया है, क्षमता और मंतव्य से जुड़कर साधारण से साधारण हथियार भी घातक हो सकता है।

हमें यह भी मानना होगा कि हमारे नियन्त्रण के बाहर घट रही घटनाएं हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा पर प्रभाव डाल सकती हैं। विश्व राजनीतिक घटनाचक्र अक्सर अमेरिका के विरुद्ध आतंकवादियों और आपराधिक चुनौतियों को आकार देती हैं।

यही राजनीतिक घटनाक्रम अन्तरराष्ट्रीय समुदाय की निगाह में अमेरिका की छवि को बदल भी सकते हैं। और फिर नागरिक अन्सतोष, संसाधनों की तंगी और बदलता वैश्विक अर्थतंत्र भी है।

अभी हम इस बात पर चर्चा करेंगे कि कैसे हॉर्न ऑफ़ अफ्रीका में बना कोई संकट मिन्नियापॉलिस तक प्रभाव डाल सकता है। साम्यवाद के पतन ने साइबर चोरों की जैसे एक सेना ही तैयार कर दी है। संसार भर में संस्कृतियों के समन्वय ने सरकार-प्रायोजित गुप्तचरी, चाइल्ड पोर्नोग्राफी के फलते-फूलते बाजार और साथ ही आपराधिक गिरोहों की गतिविधियों को आसान बनाया है।

## खतरे का सामना

मैं स्वीकार करता हूं कि यह परिदृश्य भयावह लगता है। और यह पहले दर्जे के सूचना संग्रह और मजबूत अन्तरराष्ट्रीय साझेदारियों की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

आइस हॉकी के महान कनाडाई खिलाड़ी वेन ग्रेट्ज्की से एक बार जब पूछा गया कि वह निरन्तर बर्फ पर सही जगह पर कैसे पहुंच जाते हैं तो उनका उत्तर था कि बाकी खिलाड़ी वहां पहुंचते हैं जहां पक (आइस हॉकी की गेंद) पहुंचता रहा है, मैं वहां पहुंचता हूं जहां पक होगा।

यही बात एफबीआई के हम लोगों के लिए भी सच है। हमें मालूम रहना चाहिए कि खतरा किस ओर जा रहा है, और हमें पहले ही वहां मौजूद रहना चाहिए।

जिन उपकरणों के बूते हमने कानून प्रवर्तन संगठन के तौर पर अपनी प्रतिष्ठा बनाई है - स्रोतों का विकास, निगरानी, संदेश पकड़ना और अपराधशास्त्रीय विश्लेषण- ये वही उपकरण है जो एक सुरक्षा सेवा के लिए आवश्यक हैं।

हमारे लिए चुनौती होती है आक्रमण को होने से पहले ही उसे बाधित करने के लिए सूचना विकसित कर पाना।

प्रभावी सिद्ध होने के लिए हमें विभिन्न मामलों में मौजूद कमियों और अपने ज्ञान आधार की खामियों को पाटने के लिए सोचते-समझते हुए सूचनाएं संग्रहीत करनी होंगी। और आपराधिक और आतंकवादी खतरों की ही तरह ये खुफिया जानकारियां भी भी हर शहर, हर राज्य में, अलग-अलग तरह की होंगी।

हमें यह भी नियत करना होगा कि संसारभर में दिख रहे खतरे क्या हमारे यहां भी संभावित खतरे बन सकते हैं? क्या सोमालिया में हुआ आत्मघाती बम धमाका हमारे लिए अधिक खतरे की बात है? क्या हम उस खतरे के पूरे विस्तार को समझते हैं?

हमें गिने-चुने लोगों पर मुकदमा चलाने और पूरे नेटवर्क को भंग करने के लिए आवश्यक सूचना जुटाने

**ज़्यादा जानकारी के लिए:**

संघीय जांच ब्यूरो
http://www.fbi.gov/

गुप्त जांच से आतंकवादी साजिश का भंडाफोड
http://www.fbi.gov/page2/may07/ftdix050807.htm

मुंबई हमले: आतंकवाद की रणनीति में बदलाव
http://www.time.com/time/world/article/0,8599,1862795,00.html

चार्ली सोह चेज़ेंगेर © ए.पी. - डब्ल्यू डब्ल्यू पी.

के तुलनात्मक हानि-लाभों पर भी विचार करना चाहिए।

ब्रिटिश गुप्तचर सेवा एमआई 5 के निदेशक जोनाथन इवान्स ने कहा, ''किसी के बारे में पता होना, उनके बारे में सब कुछ पता होना तो नहीं है।'' और वह ठीक कहते हैं।

जब भी कोई व्यक्ति खतरा बनता दिखता हो, हमें कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न पूछने चाहिए: यह व्यक्ति कहां रहता है? इसके साथी कौन हैं और अब वे कहां हैं? और किससे उनका सम्पर्क-संवाद है?

ऐसे लक्ष्यित सूचना संग्रह में समय लगता है- इसे धीरज और समर्पण की दरकार है। और यह देश में और विदेशों में भी प्रयास की एकता की मांग करता है।

सूचना हमें अदृष्ट को देखने में, क्षितिज पर उभरते नए खतरों के संधान में, समर्थ बनाती है। लेकिन हमारे सामने आने वाले खतरों की प्रकृति और संख्या के चलते अच्छा से अच्छा सूचना संग्रहण पूरी निश्चितता उपलब्ध नहीं करवा सकता।

यह प्रश्न बना ही रहता है कि हम दूसरे देशों से आने वाले खतरों से खुद को कैसे सुरक्षित रखें? हम अपनी सीमाएं बंद नहीं कर सकते, न इंटरनेट से कट सकते हैं। हमें स्रोत से शुरुआत करनी होगी।

मुंबई के हमलों से पहले दिन स्पेशल एजेंट स्टीव मेरिल- वह एफबीआई के नई दिल्ली कार्यालय में कानूनी मामलों के अताशे हैं- लगभग महीने भर में नसीब हो पाई अपनी पहली छुट्टी मनाने महाराजा के वार्षिक टूर्नामेंट में अमेरिकी दूतावास की टीम में क्रिकेट खेलने जोधपुर जा रहे थे। मैं साफ कर दूं कि एफबीआई के नई दिल्ली कार्यालय में काम करने के लिए क्रिकेट खेलना आवश्यक तो नहीं है लेकिन इसमें कोई हर्ज भी नहीं। जैसे ही हमें हमलों की जानकारी हुई स्टीव मुंबई निकल गए। उनके पास बस पहने हुए कपड़े, अपना ब्लैकबेरी फोन और क्रिकेट का अपना साजोसामान था।

उन्होंने तुरंत भारतीय समकक्षों से सम्पर्क किया और काम में जुट गए। न कोई लालफीताशाही, न अधिकार क्षेत्र के झमेले, थे तो बस संकट की घड़ी में कंधे से कंधा मिलाए खड़े सबसे पहले पहुंचे साथी।

तीन दिन तक मुंबई में गोलियों, धमाकों, आग और बदहवासी का दौर चला। उस भगदड़ के बीच स्टीव ने ताज होटल के अंदर फंसे अमेरिकियों को बचाने में मदद की। उन्होंने अपने एफबीआई और सूचना संग्रह समुदाय के साथ सम्पर्क स्थापित करने का काम किया और हमारी रैपिड डिप्लॉयमेंट टीम के आगमन का समन्वय किया।

संकट के खत्म होने से पहले ही जांच-पड़ताल शुरू हो चुकी थी। एफबीआई के नई दिल्ली और इस्लामाबाद कार्यालयों के एजेंटों ने भारत सरकार, सीआईए, विदेश विभाग, एमआई 6 और न्यू स्कॉटलैंड यार्ड से सहयोग किया।

इन साझेदारियों के माध्यम से साक्ष्यों और सूचना तक हमारी अभूतपूर्व पहुंच बनी। एजेंटों और विश्लेषकों ने एकमात्र जीवित बचे हमलावर सहित 60 से भी अधिक लोगों के साक्षात्कार लिए। हमारे फोरेंसिक विशेषज्ञों ने विस्फोटक उपकरणों पर से उंगलियों के निशान उठाए। उन्होंने क्षतिग्रस्त सेलफोन से डाटा निकाला, यहां तक कि टूटफूट चुके फोन को दुबारा जोड़कर भी डाटा निकाला गया।

इसके साथ ही हमने सूचना जमा की, उसका विश्लेषण किया और उसे देश और विदेश में अपने सहभागियों के बीच प्रसारित किया -केवल यही नियत करने के लिए नहीं कि इन हमलों की योजना कैसे और किसने बनाई थी, बल्कि यह सुनिश्चित करने के लिए कि अगर और हमले होने हों तो हमारे पास उन्हें रोक पाने लायक सूचना रहे।

**हमें इस बात का पता लगाने की ज़रूरत है कि खतरा कहां पर होने जा रहा है, और हमें वहां पहले ही पहुंचने की ज़रूरत है।**

मुंबई में हमारा काम बहुत असाधारण नहीं था। इन खतरों का प्रतिरोध करने के लिए पहले हमें उन्हें सूचना के माध्यम से समझना होगा। एक बार हमें उनकी समझदारी हो जाए तो हमारी कानून प्रवर्तन एजेंसियां हमें व्यक्तियों और नेटवर्क पर कार्रवाई की अनुमति दे देती हैं।

हम न तो ऐसी सूचना सेवा हैं जो सूचना जमा करती है लेकिन उस पर कार्रवाई नहीं करती, न ही हम ऐसी कानून प्रवर्तन सेवा हैं जो बिना जानकारी कार्रवाई करती है। आज की एफबीआई एक ऐसी सुरक्षा एजेंसी है जिसमें खतरों की व्यापकता को समझने की योग्यता के साथ-साथ उन खतरों को ध्वस्त करने की क्षमता भी है।

लेकिन हम समझते हैं कि हम अकेले काम नहीं कर रहे। एफबीआई एकेडमी (वर्जिनिया में) के हमारे अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से हम संसारभर में हजारों सहयोगी गुप्तचर अधिकारियों को घनिष्ठ रूप से जानते हैं। और संकट की घड़ी में वह मैत्री, वह परिचय एक तत्काल और प्रभावी जवाबी कार्रवाई तय करते हैं।

**बहुत बार हमें उन समुदायों से सबसे ज़्यादा मदद की ज़रूरत होती है जो हम पर सबसे कम यकीन करते हैं। लेकिन हमें इन समुदायों के बीच अपने प्रयास दो गुने कर देने चाहिए।**

## समुदाय संपर्क

हमें संसार में अपने कानून प्रवर्तन और सूचना संग्रह सहयोगियों के साथ काम करते रहना जारी रखना चाहिए। लेकिन हमें अमेरिका में भी हमें हानि पहुंचाने

वालों को पहचानने और उनके काम को रोकने के लिए उन नागरिकों के साथ भी काम करना चाहिए जिनकी सेवा हम करते हैं।

अक्सर ही हमें कानून प्रवर्तन और समुदाय के बीच खड़ी उस दीवार का सामना करना होता है जो हमारे काम के बारे में फैली भ्रांतियों और मिथकों पर टिकी है।

हम जानते हैं कि इस दीवार को तोड़ने का सबसे अच्छा तरीका है एक-एक ईंट को अलग करना, एक-एक व्यक्ति का विश्वास जीतना।

लेकिन हम हमारे साथ संवाद को लेकर कुछ समुदायों के अनमनेपन को भी समझते हैं। वह ऐसे देशों से आए हो सकते हैं जहां राष्ट्रीय पुलिस बल और सुरक्षा सेवाएं भय और अविश्वास पैदा करते हैं।

अक्सर हमें सबसे अधिक मदद की ज़रूरत उन समुदायों से होती है जो हम पर सबसे कम विश्वास करते हैं।

एक पैटर्न विशेष रूप से हमें चिन्तित करता है। 11 सितम्बर के बाद से हमें अमेरिका के समुदायों के ऐसे युवकों के बारे में पता चलता रहा है जिन्हें अफगानिस्तान या इराक, यमन या सोमालिया जैसे देशों में जाने के लिए यहीं भर्ती और दीक्षित किया गया। उन्हें लड़ने के लिए या अन्ततः आत्मघाती हमलावर बनने के लिए भर्ती किया जाता है।

मिन्नियापोलिस, मिनेसोटा का एक व्यक्ति जहां तक हम जानते हैं आतंकवादी आत्मघाती बमबारी करने वाला पहला अमेरिकी नागरिक बना। हमला पिछले अक्टूबर में उत्तरी सोमालिया में हुआ लेकिन घटनाक्रम से पता चलता है कि इस व्यक्ति को मिनेसोटा में अपने गृहनगर में ही दीक्षित किया गया था।

अपने ही समुदाय के अन्दर भर्ती और दीक्षित किए गए युवाओं को सोमालिया जाकर खुद को और शायद बहुत से और लोगों को भी मार डालने के लिए हथियार उठाने को प्रेरित किया जाना अप्रवासी कथा का विकृत स्वरूप है।

इनमें से बहुत से युवाओं के माता-पिता ने अपने बच्चों के लिए एक उज्जवल, अधिक स्थिर भविष्य की तलाश में अमेरिका आने के लिए सब कुछ दांव पर लगा दिया। इन माता-पिता के लिए जो युद्ध से क्षत-विक्षत अपना देश छोड़कर भागे थे, अपने बच्चों को उसी जीवनक्रम में लौटने के लिए मना लिए जाना, हृदयविदारक है।

**जब हम में से कोई भी खतरे में होता है तो हम सभी खतरे में होते हैं। हम में से किसी एक पर हमला, हम सभी पर हमला है।**

और फिर सवाल उठता है कि क्या ये युवा किसी दिन घर लौटेंगे? अगर लौटेंगे तो फिर यहां क्या करेंगे?

इन माता-पिताओं का अपने बच्चों को लेकर परेशान होना समझ में आता है। हम भी चिंतित हैं- केवल इन्हीं परिवारों के लिए नहीं, बल्कि व्यापक समुदाय के लिए।

एफबीआई के समुदाय संपर्क दलों के सदस्य इन मुद्दों पर विचार करने के लिए इन समुदायों के सदस्यों से मिलते रहते हैं।

हम मिलजुल कर प्रगति कर रहे हैं। लेकिन इस दिशा में काफी काम किया जाना बाकी है।

सरल सच्चाई यह है कि अमेरिकी जन के विश्वास के बिना हम अपना काम नहीं कर सकते। और यह विश्वास तब तक नहीं बन सकता जब तक हम आगे बढ़कर यह नहीं कहते कि हम ब्यूरो वाले आपके साथ हैं, हम आपकी सहायता के लिए तत्पर हैं।

## निष्कर्ष

जिस संसार में हम रहते हैं, वह असंख्य रूपों में बदल चुका है। और बदलाव के जहां नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं, वहीं यह नई खोजों का कारण भी बन सकता है। यह नए दृष्टिकोण, नए विचार और काम करने के नए तरीके ला सकता है।

लेकिन भारी बदलाव के दौरों में भी कई चीज़ें स्थिर बनी रहती हैं: सुरक्षा की कामना....शांति और समृद्धि की आशा... और हमें विभाजित कर देने में सक्षम ताकतों के विरुद्ध एकजुटता की आवश्यकता।

यह चीज़ संसार के सभी समुदायों और देशों में समान हैं। और ब्यूरो के हम लोग हर रोज इन्हीं को बचाए रखने का प्रयास करते हैं।

अपराध और आतंकवाद का संसार निस्सन्देह विस्तृत होता जाएगा। और एफबीआई के हम लोग उसको तलाशने की अपनी मुहिम बनाए रखेंगे जो हम मानते हैं कि कहीं मौजूद है भले ही हम उसे देख न पाते हों।

हम समझते हैं कि जब हम में से कोई भी खतरे में होता है तो हम सभी खतरे में होते हैं। हम में से किसी एक पर हमला, हम सभी पर हमला है। और कोई भी असफलता सामूहिक असफलता है।

केवल एकजुट होकर, एक समुदाय के रूप में आगे बढ़कर, स्थायी प्रगति संभव है।

*यह भाषण 23 फ़रवरी को दिया गया।*